B.Ed. IInd year

Knowledge, Language ≠ curriculum

Topic :- अन्तर-विषय सहसम्बन्ध
Intersubject Correlation

अन्तर-विषय सहसम्बन्ध का अर्थ है - शिक्षण के विभिन्न विषयो का परस्पर सम्बन्धित होना। प्रत्येक विषय एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। विभिन्न विषयो का पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करके शिक्षण की क्रिया को सम्पादित करना ही अन्तर विषय सहसम्बन्ध कहलाता है।

वस्तुतः ज्ञान अखण्ड है, ज्ञान एक इकाई है। पाठ्यक्रम के अनेक विषयो मे परस्पर सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ है, जैसे भाषा की शिक्षा का सहसम्बन्ध सभी विषयो से है।

डेकार्ट के अनुसार :- "समस्त ज्ञान सानुबंधित होना चाहिए। प्रकृति ने ज्ञान को एक तथा अविभाज्य बनाया है, अत. शिक्षको का दायित्व है कि वे ज्ञान को विभाजित करने का प्रयास न करे।"

डॉ पी० आर० के अनुसार :- "एक विषय का दूसरे विषयो मे सम्बन्ध होना अधिगम मे सहायक होता है।"

* अन्तर विषय-सहसम्बन्ध की आवश्यकता एवं महत्व →

⇒ संकीर्ण विशिष्टीकरण के दोषो से मुक्त करने के लिए विषयों के शिक्षण मे सहसम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

P.T.O

Scanned with CamScanner

⇒ अन्तर विषय सहसम्बन्ध से बालक पाठ्यक्रम के आधार पर प्राप्त होने वाले ज्ञान को समग्र या सम्पूर्ण रूप से प्राप्त कर लेता है।

⇒ अन्तर विषय सहसम्बन्ध से बालको पर पाठ्यक्रम का भार हल्का हो जाता है। बालक के सीखने की क्रियाएँ एक दूसरे से स्वाभाविक रूप से सम्बन्धित हो जाती है। जिससे बालक के ऊपर सीखने का बोझ कम हो जाता है।

⇒ अन्तर-विषय सहसम्बन्ध द्वारा शिक्षा प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक आधार मिलता है। इसमे शिक्षक एक दूसरे विषय से स्वाभाविक रूप से जोड़ने का प्रयत्न करता है।

⇒ पाठ्यक्रम के विविध विषयो मे सहसम्बन्ध इसलिए भी आवश्यक है कि बालको के जीवन मे उनका प्रयोग सरलतापूर्वक हो सके।

⇒ पाठ्यवस्तु को सरल, रोचक और बोधगम्य बनाने के लिए अन्तर-विषय सहसम्बन्ध आवश्यक है, इससे विषय की नीरसता समाप्त हो जाती है और बालको की विषय मे रूचि उत्पन्न हो जाती है।

⇒ अन्तर-विषय सहसम्बन्ध बालक के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण है। और कम समय मे अधिक पाठ्यवस्तु को व्यापक रूप मे प्रस्तुत किया जा सकता है, और विषय की सूक्ष्मताओ एवं गहनताओ को व्यापक रूप से बालको को बताया जा सकता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

*. अन्तर - विषय सहसम्बन्ध के सिद्धान्त *

⇒ अन्तर विषय सहसम्बन्ध विषयो की प्रकृति और बालको के मानसिक विकास के लिए होना चाहिए।

⇒ प्रकरण विशेष के शिक्षण से सम्बन्धित विषयो की विषय सामग्री का अधिकतम प्रयोग किया जाना चाहिए।

⇒ विभिन्न विषयो के अध्ययन एवं सामुदायिक जीवन मे सदैव सहसम्बन्ध सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

⇒ पाठ्यवस्तु को जीवन की अनेक क्रियाओ से सहसम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रस्तुत करना चाहिए। जिससे बालको को सीखने के लिए प्रेरणा मिल सके।

⇒ विविध विषयो के शिक्षण मे उनकी पूर्व सम्बद्धता को ध्यान मे रखा जाना चाहिए, जैसे - गणित समूह मे अंकगणित, बीजगणित, तथा रेखागणित को सम्बद्ध किया जा सकता है।

⇒ सैद्धान्तिक और प्रायोगिक अध्ययनो मे भी अधिक से अधिक सहसम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए। इससे बोध एवं अधिगम या क्रियात्मक पक्ष से सम्बन्ध स्थापित होता है।

⇒ इसमे शिक्षक को विषय, प्रसंग, सन्दर्भ की पाठ्यवस्तु तथा प्रकरणो की योजना बनाकर शिक्षण बालको की रुचियो और स्वाभाविक प्रवृत्तियो का विकास तथा उनमे अन्तर्दृष्टि विकसित हो।

Thank you

? Complete this table next turn.

by
Mr. Parveen Raj
Assis. Pro.
B.R.C. Deoband
(SRE)

Scanned with CamScanner